प्रकाशन तिथि : 01 जुलाई, 2021
प्रेषण तिथि : 04 जुलाई, 2021

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 25 | अंक 08 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

चुरू शहर के संस्थापक की मूर्ति स्थापना की मांग

चुरू जिला थार के रेगिस्तान का भाग है। आजादी से पूर्व यह क्षेत्र बीकानेर रियासत का हिस्सा था। जोधपुर से बीकाजी के आने से पहले यह क्षेत्र सांखलों, मोयलों, चाहिलों, यौधेयों आदि राजपूत वंशों के अधीन था। 18वीं शताब्दी तक चुरू शहर का उल्लेखनीय अस्तित्व नहीं था और पहले यहां कुछ खेतिहर व पशुपालक जातियों की ढाणियां थीं। कालांतर में यह क्षेत्र कांधल जी की संतान कांधलोत राठौडों के नियंत्रण में आया और 1739 ई. में ठाकुर कुशाल सिंह कांधलोत ने यहां किले का निर्माण करवाया। उन्होंने उस समय फतेहपुर शेखावाटी के बनियों को यहां लाकर बसाया और उन्हें सुरक्षित व्यापार करने के अवसर उपलब्ध करवाये। साथ ही किले के आस पास नगरीय सुविधाओं का विस्तार कर इसे शहर का स्वरूप प्रदान किया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

राम के गुणगान का नहीं, राम बनने का मार्ग है संघ

(संघप्रमुख श्री का जैसलमेर प्रवास)

श्री क्षत्रिय युवक संघ का काम भगवान का ही काम है, यह मान कर चलें कि यह भगवान का ही सौंपा हुआ काम है और भगवान का काम करने से भगवान की ओर बढ़ने का मार्ग प्रशस्त होता है। इस प्रकार संघ का मार्ग राम के गुणगान का मार्ग नहीं है बल्कि राम बनने का मार्ग है। 27 जून को अपने जैसलमेर प्रवास के दौरान संभागीय कार्यालय 'तनाश्रम' में स्वयंसेवकों से चर्चा करते हुए माननीय संघप्रमुख श्री ने उपरोक्त बात कही। उन्होंने कहा कि हमारे पूर्वजों ने नारा दिया कि 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' जिसका अर्थ है कि हम संसार को हमारी सनातन संस्कृति के माध्यम से श्रेष्ठता की ओर अग्रसर करें। संसार में अन्य संस्कृतियों को मानने वाले लोगों ने भी प्रकारांतर से ऐसा ही नारा दिया लेकिन उनके और हमारे तरीके में मूलभूत अंतर रहा। उन्होंने जहां भय और लालच के सहारे पददलित कर लोगों को अपनी संस्कृति का अनुयायी बनाया वहीं हमने हमारी श्रेष्ठताओं को उनके सामने प्रस्तुत कर उनकी मान्यताओं का सम्मान करते हुए उन्हें अपना बनाया और इसीलिए हमारे पूर्वजों के नेतृत्व में भारत विश्वगुरु कहलाया। हम यह सब इसीलिए कर पाये क्योंकि हम रुके नहीं, मील के पत्थर नहीं बने, रूढ नहीं हुए बल्कि प्रगतिशील बने रहे। हमें आज भी प्रगतिशील बने रहना है, श्री क्षत्रिय युवक संघ प्रगतिशील मार्ग है, यह रूढिगत साधना नहीं है, यहां साधन का हठ श्रेष्ठ नहीं माना जाता। इसलिए हम सब अपने आप को संघ की गति के साथ समायोजित करें, रुकें नहीं, ठहरें नहीं बल्कि निरंतर चलते रहें। हमारे महापुरुषों ने चरैवेति चरैवेति का सूत्र दिया है, उसको चरितार्थ करें।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

रामसिंह स्मृति दिवस कार्यक्रम का वर्चुअल आयोजन

श्री क्षत्रिय युवक संघ के हीरक जयंती वर्ष के उपलक्ष में संघ के जैसलमेर संभाग द्वारा जैसलमेर के बसियां क्षेत्र के राजपूतों के पूर्वज रामसिंह का स्मृति दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। संघ के केंद्रीय कार्यकारी देवी सिंह जी माडपुरा ने अपने उद्बोधन में बताया कि राम सिंह जी जैसलमेर के तत्कालीन राजघराने से सम्बन्धित थे। उन्होंने जैसलमेर को मुल्तान के बादशाह की लूट से बचाने और उसे भगाने के लिए सेना बनाकर प्रतिरोध किया। उन्होंने उसके खजाने को लूट कर जैसलमेर राज्य के राजकोष में जमा करवाया और जब दिल्ली के शासकों के दबाव में तत्कालीन राजपरिवार द्वारा उसे वापस सौंपने का निर्णय किया तो जनता की आवाज बनकर राजपरिवार के निर्णय का विरोध भी किया। पू. तनसिंह जी ने लिखा है कि सच के लिए देवों से भी अड़ना ही पड़ेगा, इसी पंक्ति का व्यवहारिक स्वरूप है उनका यह विरोध।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

'भ्रातृत्व प्रेम के पुण्य प्रतीक थे राव जैतमाल'

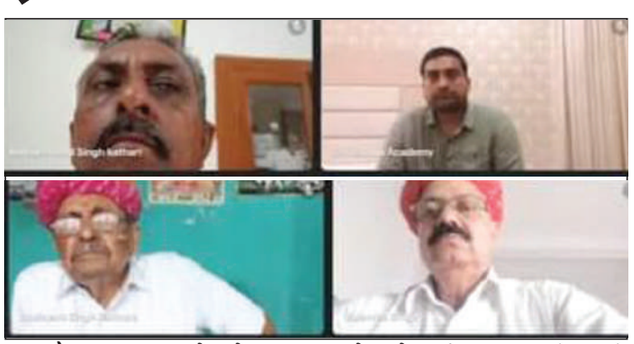

राव जैतमाल भ्रातृत्व प्रेम के पुण्य प्रतीक थे। उनके बड़े भाई रावल मल्लीनाथजी के पुत्र जगमाल द्वारा उन पर प्राणघातक हमला किया गया और वे अत्यंत घायल हो गये। मरणासन्न अवस्था में उन्होंने अपने 12 पुत्रों से यह वचन लिया कि वे उन पर हुए प्राण घातक हमले के बदले में उनके बड़े भाई रावल मल्लीनाथजी की संतानों से कोई वैर नहीं रखेंगे और वैर को वहीं समाप्त कर देंगे। इस प्रकार उन्होंने अपने भ्रातृ प्रेम का अनुठा उदाहरण पेश करते हुए अपनी दूरदर्शिता से पारिवारिक कलह को सदा के लिए समाप्त करने का पुण्य काम किया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

संघ साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भ

पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा रचित 'बदलते दृश्य' पुस्तक के 'बदलते दृश्य' प्रकरण से मेवाड़ के दूसरे शाके के सन्दर्भ में रानी कर्मवती के बारे में :

महाराणा सांगा की मृत्यु के बाद उनके पुत्र रतनसिंह मेवाड़ के शासक बने और महाराणा सांगा के अन्य दो पुत्र विक्रमादित्य और उदयसिंह को रणथम्भौर की जागीर मिली। महाराणा सांगा के चार पुत्र भोजराज, पूर्णमल, पर्वतसिंह और कृष्णसिंह तो महाराणा सांगा के जीवन काल में ही परलोक की यात्रा पर चले गए थे। महाराणा सांगा की मृत्यु के बाद मांडू के बादशाह महमूद खिलजी ने अपने एक सेनापति को मेवाड़ में लूट खसोट के लिए भेजा। महाराणा रतनसिंह को ये समाचार मिलने पर उन्होंने मालवा की ओर कूच किया। महमूद भी अपनी सेना सहित सारंगपुर पहुंचा, महमूद के कुछ सेनानायक मेवाड़ी वीरों से डर कर महाराणा रतनसिंह से सुलह कर युद्ध स्थल छोड़कर चले गए। भयभीत महमूद मांडू की ओर भाग गया और महाराणा रतनसिंह उसके राज्य को नष्ट करते हुए वापिस लौट आए। महाराणा रतनसिंह अल्पकाल तक ही शासन कर पाए और बूंदी के सूरजमल के साथ एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना में मारे गए। महाराणा रतनसिंह की मृत्यु के बाद महाराणा सांगा के एक अन्य पुत्र विक्रमादित्य, जो महाराणा सांगा की हाडी रानी कर्मवती के गर्भ से उत्पन्न हुआ, मेवाड़ का शासक बना। हाड़ी रानी कर्मवती बूंदी के हाडा नरबद की पुत्री थी और बहुत ही नीतिज्ञ और कुशल प्रशासक थी। विक्रमादित्य एक अयोग्य शासक सिद्ध हुआ जिसने राजकार्य की उपेक्षा की और केवल पहलवानों में रुचि ली, उनके मूर्खतापूर्ण व्यवहार से मेवाड़ के अनेक महत्वपूर्ण व योग्य सामन्त मेवाड़ छोड़कर चले गए। मेवाड़ के शत्रुओं ने इसे सुअवसर जानकर गुजरात के शासक बहादुरशाह को चित्तौड़ पर आक्रमण के लिए तत्पर किया। कुछ इतिहासकारों के अनुसार उसने चित्तौड़ पर लगातार दो वर्ष आक्रमण किया उसके पहले आक्रमण को रानी कर्मवती ने अपनी सुझ-बुझ से विफल कर उसे वापिस लौटने पर मजबूर कर दिया। वि.सं. 1561 में बहादुरशाह ने और अधिक तैयारी के साथ चित्तौड़ पर आक्रमण किया। विक्रमादित्य की अयोग्यता के कारण मेवाड़ का शासन प्रबन्ध नाकारा लोगों के हाथ में था, बहादुरशाह के विशाल सेना के साथ चित्तौड़ पर आक्रमण का समाचार जानकर रानी कर्मवती ने विक्रमादित्य के आचरण से नाराज प्रमुख सरदारों को चित्तौड़ के गौरव की रक्षा के लिए बुलावा भेजा। रानी कर्मवती ने सभी प्रमुख सरदारों को संदेश भेजा कि अब चित्तौड़ को आप सिसोदियों के हाथ में रखो या जाने दो ये निर्णय आपको करना है। हाड़ी रानी कर्मवती के इन वचनों ने सभी राजपूत सरदारों को कर्तव्यबोध करवा दिया और सभी चित्तौड़ रक्षा के लिए चित्तौड़ आ गए। देवलिया के रावत बाघसिंह को चित्तौड़ रक्षा के लिए मुख्य सेनापति बनाया गया, विक्रमादित्य और उदयसिंह को चित्तौड़ से सुरक्षित निकाल कर बूंदी पहुंचा दिया गया। किले की रसद की सामग्री नगण्य थी इसीलिए मेवाड़ी वीरों ने शाके का निर्णय लिया। बहादुर शाह की सेना अत्यन्त विशाल थी जिसमें गुजरात के अलावा दक्षिणी कर्णाटक, मालवा की सेना भी शामिल थी। राजपूत सैनिक किले का द्वार खोल रावत बाघसिंह के नेतृत्व में बहादुर शाह की सेना पर भूखे सिहों की भांति टूट पड़े। मेवाड़ी वीरों के पराक्रम ने बहादुरशाह और उसकी सेना में भगदड़ मचा दी लेकिन अपने से कई गुणा सेना से युद्ध करते हुए मेवाड़ी वीर एक के बाद एक वीरगति को प्राप्त होते गए, रावत बाघसिंह पाडल पोल दरवाजे पर वीरगति को प्राप्त हुए। अन्य प्रमुख सरदारों ने देसूरी के सोलंकी भैरवदास, देलवाड़े के राणा सज्जा, सादड़ी के राणा सिंध, रावत दूहा रतनसिंहोत, डोडिया भाण आदि बत्तीस हजार राजपूत सैनिकों के साथ वीरगति को प्राप्त हुए। महारानी कर्मवती के नेतृत्व में तेरह हजार क्षत्राणियों ने अपनी वंश परम्परा और सतीत्व रक्षा के लिए जौहर किया। **-खींवसिंह सुल्ताना**

सन्दर्भ ग्रंथ : वीर विनोद : कविराज श्यामलदास

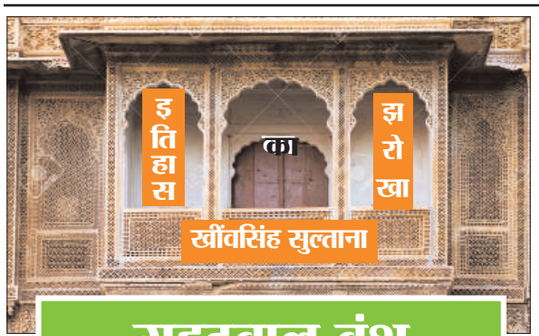

गहड़वाल वंश

गोविन्दचन्द्र के बाद उसका पुत्र विजयचन्द्र (1155-1169 ई.) शासक बना, अभिलेखों में उसके दो अन्य नाम मल्लदेव और विजयपाल भी मिलते है? विजयचन्द्र का संघर्ष लाहौर के मुस्लिम शासक खुशरोशाह से हुआ जिसमें विजयचन्द्र को विजय प्राप्त हुई। जिसका विवरण उसके पुत्र जयचन्द्र के कमौली (बनारस) लेख में मिलता है। विजयचन्द्र के तुर्क शासक से संघर्ष में फंसे रहने के दौरान पूर्व से बंगाल के सेनवंश के शासक लक्ष्मण सेन ने उसके राज्य पर आक्रमण किया। यद्यपि इस आक्रमण में लक्ष्मणसेन को विजय प्राप्त हुई परन्तु वह गहड़वाल साम्राज्य के किसी भाग पर आधिपत्य ना जमा सका। विजयचन्द्र के समय दिल्ली के तोमरवंशी शासक जो पहले गहड़वालों के सामन्त रूप में शासन करते थे, वे अब चौहानों के सामन्त रूप में शासन करने लगे। शाकम्भरी के चौहान शासक वीसलदेव ने दिल्ली और हांसी को जीत कर अपने अधिकार में कर लिया ये प्रदेश पहले गहड़वालों की अधीनता में थे। इस प्रकार विजयचन्द्र के समय गहड़वाल साम्राज्य की प्रतिष्ठा को आघात पहुंचा। विजयचन्द्र के बाद जयचन्द (1170-1194 ई.) गहड़वाल साम्राज्य का शासक बना। समकालीन मुस्लिम लेखकों ने उसे भारत के सबसे शक्तिशाली शासकों में से एक माना है। शासक बनने के बाद जयचन्द्र ने साम्राज्य में आई प्रशासनिक दुर्बलता को दूर किया, योग्य अधिकारियों की नियुक्ति की। जयचन्द्र ने गहड़वाल साम्राज्य की सीमाओं को सुरक्षित रखने के लिए अनेक किलों का निर्माण करवाया। विजयचन्द्र के समय से ही शाकम्भरी के चौहानों और गहड़वालों में पारस्परिक वैमनस्य उत्पन्न हो गया था। जयचन्द्र का समकालीन चौहान शासक पृथ्वीराज तृतीय था। दिल्ली को लेकर दोनों शासकों की महत्वाकांक्षाएं टकराई और दोनों के मध्य वैमनस्य बढ़ गया, पृथ्वीराज और चन्देल शासक परमार्दिदेव के मध्य हुए युद्ध के दौरान भी जयचन्द्र का संघर्ष चलता रहा। पृथ्वीराज और जयचन्द्र दोनों ही विदेशी आक्रमणकारी गौरी को कई बार परास्त कर चुके थे और उसे राष्ट्र का शत्रु मानते थे लेकिन पारस्परिक द्वेषभाव के कारण दोनों मोहम्मद गौरी के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा नहीं बना पाए। कुछ इतिहासकारों ने शातिराना प्रयोजनों को लेकर जयचन्द्र पर ये मिथ्या दोषारोपण किया कि उन्होंने मोहम्मद गौरी को पृथ्वीराज पर आक्रमण के लिए आमंत्रित किया। जबकि किसीभी ऐतिहासिक साक्ष्यों या समकालीन ग्रन्थों से ऐसा कोई विवरण नहीं मिलता, ये मात्र जयचन्द्र जैसे धर्मपरायण शासक के उज्ज्वल चरित्र को कलंकित करने का दुष्कृत्य है। जयचन्द्र का तो मोहम्मद गौरी से अनेक बार संघर्ष हुआ, इन मुठभेड़ों में हर बार जयचन्द्र को ही विजय प्राप्त हुई। चौहानों के साथ प्रतिद्वंद्विता तथा बंगाल के लक्ष्मण सेन से लगातार संघर्ष के कारण गहड़वाल साम्राज्य को सैन्य दृष्टिकोण से काफी नुकसान हुआ। 1194 ई. में मोहम्मद गौरी और जयचन्द्र में चन्दावर का निर्णायक युद्ध हुआ। राजा जयचन्द्र ने बहुत ही वीरता के साथ युद्ध किया तुर्क सेना का नेतृत्व कुतुबुद्दीन ऐबक कर रहा था। इतिहासकार आशीर्वादीलाल लिखते हैं कि जयचन्द्र की सेना काल बन कर तुर्क सेना पर टूट पड़ी और राजा जयचन्द्र की विजय निश्चित लग रही थी कि दुर्भाग्यवंश एक तीर राजा जयचन्द्र की आंख में जा लगा और वो वीरगति को प्राप्त हो गए। सेना में भगदड़ मच गई और जीता हुआ युद्ध हार गए। जयचन्द्र एक कुशल शासक, वीर यौद्धा, धर्मपरायण शासक थे। विद्वानों के आश्रयदाता थे। 'नैषधमहाकाव्य' के रचयिता प्रसिद्ध विद्वान श्री हर्ष भी राजा जयचन्द्र की सभा की शोभा बढ़ाते थे। राजा जयचन्द्र स्वयं भी उच्चकोटि के विद्वान थे, उन्होंने 'रंभामंजरी' नामक नाटक लिखा। उन्होंने पुष्कर में प्रसिद्ध वाराह मंदिर का निर्माण करवाया। निसन्देह राजा जयचन्द्र अपने वंश के प्रतापी, योग्य व धर्मनिष्ठ शासक थे। जयचन्द्र के बाद कुछ समय तक कन्नौज पर उनके पुत्र हरिशचन्द्र ने शासन किया। हरिशचन्द्र के बाद गहड़वाल वंश साम्राज्य का अंत हो गया। **(क्रमशः)**

हल्दीघाटी दिवस पर दी श्रद्धांजलि

18 जून को हल्दीघाटी की स्मृति में हल्दीघाटी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर समाज के लोगों ने सोशल मीडिया व अन्य माध्यमों से इस युद्ध में बलिदान हुए सैनिकों व सेनानायकों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। चित्तौड़गढ़ के वरिष्ठ नागरिक मंच द्वारा इस अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस युद्ध में राम शाह तोमर की तीन पीढियां चंबल घाटी के सैंकडों राजपूतों के साथ काम आई थीं। इस श्रद्धांजलि सभा में पूर्व प्राचार्य गोपाल सिंह राठौड़ ने उन्हें शाब्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की।

कांग्रेस अध्यक्ष को पत्र लिख ऐतराज जताया

प्रायः राजनेताओं द्वारा एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप लगाते समय विभिन्न जाति समाजों व महापुरुषों पर ओछी टिप्पणी करने का गैरजिम्मेदाराना चलन हो गया है। ऐसे लोग जानबूझकर चर्चा में बने रहने के लिए ऐसे बयान देते हैं और फिर कह देते हैं कि उनका यह मतलब नहीं था। विगत दिनों कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता रणदीप सुरजेवाला द्वारा भी ऐसा एक बयान दिया गया। राम मंदिर निर्माण के चंदे को लेकर कथित घोटाले संबंधी आरोप लगाते समय उन्होंने अपने विरोधियों के लिए 'रावण के चारण' शब्द का उपयोग किया। इस प्रकार उन्होंने वंदनीय चारण जाति के लिए आपत्तिजनक टिप्पणी की जिसको लेकर चारण समाज में तीव्र प्रतिक्रिया हुई एवं विरोध जताया गया। इस बाबत श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा भी कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गांधी को पत्र लिखकर ऐतराज जताया गया। पत्र में यह मांग की गई कि वे अपने राष्ट्रीय प्रवक्ता से अपना बयान वापस लेने को कहें एवं माफी मांगने का निर्देश देवें।

वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप तथा झाला मानसिंह जयंती मनाई

श्री क्षत्रिय युवक संघ के मेवाड़,वागड़,मालवा संभाग के तत्वावधान में महाराणा प्रताप की 481वीं जयंती ज्येष्ठ शुक्ला तृतीया को सायं 6:30 बजे वर्चुअल रूप से मनाई गई। साथ ही हल्दीघाटी के युद्ध में अपना सर्वस्व बलिदान करने वाले झालमान सिंह की जयंती भी इसी कार्यक्रम में मनाई गई जो ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया को आती है। कार्यक्रम में मेवाड़ के इतिहास के जानकार प्रताप सिंह तलावदा ने प्रताप का शौर्य पूर्ण इतिहास बताते हुए कहा कि हल्दीघाटी के युद्ध में अपने सहयोगियों साईं दास चुंडावत, राम शाह तंवर, हकीम खां सूरी तथा राणा पूंजा के साथ राणा प्रताप ने पहला वार कर मुगल सेना को कई किलोमीटर पीछे तक धकेल दिया था। श्री तलावदा ने प्रताप व झाला मान के नामकरण की भी ऐतिहासिक जानकारी दी। साथ ही बताया कि आज राजपूत जाति संक्रमण काल में हैं। हम आज राजनीतिज्ञों के पीछे भाग रहे हैं, हम हमारे संस्कार भूल चुके हैं, हमें हमारे उसूलों व संस्कारों पर कायम रहना है। हनुमान सिंह राठौड़ शिक्षाविद एवं इतिहासकार पीसांगन (अजमेर) ने बताया कि महाराणा प्रताप एवं छत्रपति शिवाजी विश्व नक्षत्र में जननायक थे जिन्होंने संपूर्ण विश्व के सेनानियों को प्रेरणा दी है, दोनों ने ही हिंदवी स्वराज्य की स्थापना की प्रतिज्ञा ली थी। प्रताप और शिवाजी के साथ समाज का जन जन एवं प्रत्येक वर्ण के लोग खड़े थे। उन्होंने महाराणा प्रताप की वीर गाथाओं और शौर्य का बखान करते हुए बताया कि अकबर का आक्रमण हमारी संस्कृति पर आक्रमण था। आचार्य ज्ञानानंद जी महाराज ने गीता के 18वें अध्याय में वर्णित श्लोक द्वारा क्षत्रियों के गुणों की व्याख्या की और बताया कि यह सारे गुण प्रताप में मौजूद थे। आचार्य श्री ने बताया कि क्षत्रिय जाति में गुणों की कमी होती गई तथा स्वयं ही दिशाहीन हो गई। क्षत्रियों को अपने आचार-विचार, आहार-विहार पर विशेष ध्यान देना चाहिए। वर्तमान में क्षत्रियों को स्वयं जीवन मूल्यों को प्रमाणित करना पड़ेगा। श्रेष्ठ लोगों का ही सभी समाज जन अनुसरण करते हैं। जयंती कार्यक्रम में मेवाड़ के प्रसिद्ध राजस्थानी गीतकार एवं राष्ट्रीय कवि प्राचार्य सोहनलाल चौधरी ने प्रताप पर काव्य पाठ- 'केसरिया पगड़ी झुकी नहीं' करके कार्यक्रम का वातावरण जोश पूर्ण कर दिया। गुरु मैया भुवनेश्वरी पूरी ने कहा कि यह प्रताप का ही प्रताप था कि मुगलों द्वारा चित्तौड़ का नाम मोहम्मदाबाद रखने पर भी जनता ने इसे कभी नहीं स्वीकारा जबकि देश में उस समय रखे गए कई शहरों के मुस्लिम नाम अभी भी विद्यमान हैं। प्रताप एक सफल नायक थे, जिन्होंने जन-जन को प्रेरित किया। ऐसे नायक का नायकत्व आमजन में आ गया। प्रताप ने मेवाड़ व क्षत्रिय धर्म की गरिमा का पूर्ण पालन किया। गुरु मैया ने वंशावली बताते हुए कहा कि वीर शिवाजी भी इसी मेवाड़ कुल से निकले हुए क्षत्रिय थे। यह जयंती क्षत्रियों तक सीमित न रहकर राष्ट्रीय पर्व बने, एक दिन राम नवमी की तरह प्रताप जयंती भी मनेगी ऐसी आशा है। राजकीय महाविद्यालय चित्तौड़गढ़ में इतिहास के प्रोफेसर लोकेंद्र सिंह ज्ञानगढ़ ने इस अवसर पर बताया कि महाराणा प्रताप सोहलवीं शताब्दी के इतिहास पुरुष थे जिन्होंने मेवाड़ के नाम को ऊंचे स्तर पर पहुंचाया। उन्होंने विभिन्न इतिहासकारों के ऐतिहासिक प्रमाणों द्वारा बताया कि प्रताप को महानता के प्रमाण पत्र की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने कभी अपमानजनक शर्तें नहीं मानी। प्रताप के सामने दो रास्ते थे अधीनता या संघर्ष, उन्होंने दूसरे रास्ते संघर्ष को चुना। हल्दीघाटी के युद्ध में प्रताप की विजय हुई थी, जिसमें अकबर प्रताप को जिंदा या मृत पकड़ नहीं सका और ना ही अधीन कर सका। आजादी के दीवानों ने भी प्रताप को ही आदर्श माना। देश के क्रांतिकारियों के भी तीन मोमेंटो थे प्रताप, दुगार्दास एवं शिवाजी। अंग्रेजों के समय भी मेवाड़ का रुतबा था, सरदार पटेल ने भी देसी रियासतों के एकीकरण के समय कहा था कि मेवाड़ रियासत का इतिहास मैं अच्छी तरह जानता हूं। यह सारा श्रेय महाराणा प्रताप को है। हमें प्रताप के आदर्शों, मान, मयार्दा पर चलना है। जयंती कार्यक्रम का संचालन डॉ अनीता राठौड़ कारोई, बी एन महाविद्यालय उदयपुर ने किया। केन्द्रीय कार्यकारी गंगासिंह साजियाली व संभाग प्रमुख बृजराजसिंह खारड़ा भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। महाराणा प्रताप समारोह समिति जयपुर द्वारा भी राजस्थान की अस्मिता और संघर्ष के प्रतीक महाराणा प्रताप की जयंती कोरोना संक्रमण के चलते वर्चुअल रूप से मनायी गयी। समारोह में महाराणा प्रताप जीवन चरित्र व प्रेरणास्पद जीवन दर्शन पर उद्बोधन दिए गए। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता भगवान सिंह रोलसाबसार (संघ प्रमुख श्री क्षत्रिय युवक संघ) थे एवं बीजेपी प्रदेशाध्यक्ष सतीश पुनिया, केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, जयपुर शहर सांसद रामचरण बोहरा, प्रान्त प्रचारक आरएसएस शैलेंद्र कुमार अथिति के रूप में रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ कार्यक्रम संचालक प्रेम सिंह बनवासा ने उपस्थित सभी अतिथियों का स्वागत कर किया तथा सभी की ओर से महाराणा के चित्र के आगे दीप प्रज्वलित कर विधिवत शुभारम्भ किया। रामचरण बोहरा (सांसद) व शैलेंद्र कुमार जयपुर प्रान्त प्रचारक भी इस दौरान भौतिक रूप से उपस्थित रहे।

जयपुर शहर सांसद राम चरन बोहरा ने कोरोना संकट काल में भी महाराणा प्रताप को वर्चुअल माध्यम से याद किये जाने पर आयोजकों का धन्यवाद किया। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सतीश पुनिया ने वक्तव्य में बताया कि महापुरुषों की तुलना नहीं की जा सकती। मातृ भूमि की रक्षा के लिये इन्होंने सर्वस्व न्यौछावर कर मानवता की रक्षा की है जिसे विस्मृत नही किया जा सकता। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रान्त प्रचारक शैलेंद्र कुमार ने बताया कि भारत की पवित्र भूमि पर प्रताप का जन्म ज्येष्ठ मास की तृतीया तिथि को महाराणा उदय सिंह के घर हुआ। जीवन भर अकबर से संघर्ष करते रहे और अंततः महाराणा विजयी हुए, लेकिन इतिहास को तोड़ मरोड़ कर अकबर को महान बताने का प्रयास किया जाता रहा है। जो गलत है। केंद्रीय सरकार में जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने बताया कि हमारा इतिहास गौरवान्वित करने वाला है, प्रेरणादायक है जो हमें समय समय पर उत्साहित करता है। हमारे भारतवर्ष की दीर्घ परम्परा रही है और एक अलिखित विधान है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

खेतसिंह रूपावत का बलिदान दिवस मनाया

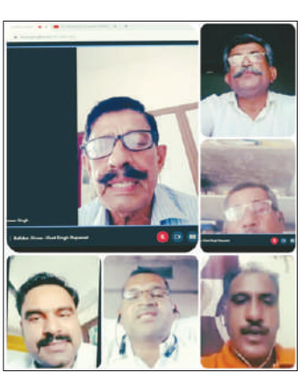

चुटकी भर नमक के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने वाले रूपावत खेत सिंह के 202वें बलिदान दिवस पर कोरोना काल के नियम के तहत उनके वंशजो द्वारा वर्चुअल कार्यक्रम कर उनको श्रद्धा सुमन अर्पित किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुये शक्ति सिंह उदट ने खेत सिंह का परिचय दिया। मुख्य वक्ता के रूप में शब्दांजलि देते हुवे डॉ. भवानी सिंह जी पातावत (इतिहासविद् व व्याख्याता, राजस्थानी भाषा) ने कहा कि खेत सिंह जैसे शूरवीरों से ही क्षत्रिय धर्म का पालन हुवा है। उन्होंने खेत सिंह की स्मृति में रचित दोहा 'खाग बजाई खेत सिंह कट बड़ हुवा बरंग, संग लड़ियो सुरतान रे उण रूपावत ने रंग।' बोलते हुए उनकी वीरता का बखान किया। गिरधरदानजी रतनू दासोड़ी (साहित्यकार एवं राजस्थानी के मूर्धन्य कवि) ने अपनी ओजस्वी वाणी से खेत सिंह की वीरता का वर्णन किया। डिंगल में उनकी कविता पाठ सुनाकर बलिदान के दृश्य को जीवंत कर दिया। डॉ. महेंद्र सिंह जी तँवर (इतिहासविद, असिस्टेंट डायरेक्टर - मेहरानगढ म्यूजियम ट्रस्ट जोधपुर) ने खेत सिंह से जुड़े हुए कई ख्यातों के बारें में बताया और उनका सन्दर्भ भी दिया। साथ ही कहा कि इतिहास के पुनरावलोकन व शोध की आवश्यकता है। रूपावत कुळ के अध्यक्ष कर्नल भंवर सिंह उदट ने सबका आभार व्यक्त किया और कहा कि ऐसे कार्यक्रमों की बार बार पुनरावृति होती रहे तभी लोगों को इतिहास की जानकारी मिल सकेगी। हरिनारायण सिंह खुड़ियाला ने भी रूपावत कुळ की तरफ से सभी को धन्यवाद ज्ञापन देते हुवे कहा कि आज के युवाओं को खेतसिंह जी से प्रेरणा लेनी चाहिए और जीवन में आज बताए गए मूल्यों पर ध्यान देना चाहिए।

संपादकीय

आखिर क्या हो हमारे प्रत्याक्रमणों की दिशा?

हमारे समाज पर नित्य प्रति हो रहे आक्रमणों के प्रति हमारी जागरुकता विगत समय में बढ़ी है और इसके परिणाम स्वरूप हमारा प्रतिकार भी दर्ज हो रहा है। यह एक सुखद संकेत है क्योंकि उचित समय पर प्रभावी प्रतिकार समाज की चेतना शक्ति के जागृत होने का संकेत देता है और यह किसी भी जीवित समाज के लिए आवश्यक है। संघर्ष प्रियता क्षत्रियत्व का एक महत्वपूर्ण घटक है और इसी कारण वह हर परिस्थिति में मैदान में डटा रहता है। तमाम तरह की प्रतिकूलताओं और षड़यंत्रों के बावजूद हम हमारी इस संघर्ष प्रियता को जागृत रख पाये हैं यह भी हमारी कम उपलब्धि नहीं है, यह हमारी कौम की जीजिविषा का प्रबल उदाहरण है और इसी जीजिविषा के बल पर हमारी कौम का सुदीर्घ अस्तित्व कायम रह पाया है। इस प्रकार प्रतिक्रिया, प्रतिकार और प्रतिहिंसा हमारा नैसर्गिक स्वभाव है और यह बना भी रहना चाहिए। जितना हमारी इस कौम का जीवन सुदीर्घ है उतना ही हमारा विरोध सुदीर्घ है, हमारे पर होने वाले आक्रमणों की श्रृंखला भी सुदीर्घ है। इन आक्रमणों का स्वरूप बदलता गया और हम भी देर सबेर उस स्वरूप को समझ कर उनका प्रतिकार करते रहे। लेकिन इस देर सबेर ने हमारे को हानि भी कम नहीं पहुंचाई है। आक्रमण के स्वरूप को समझने की यह देरी हमारे मार्ग को कठिन बनाती है और कई बार ऐसा लगता है कि हम पिछड़ रहे हैं। आक्रमण के स्वरूप के अनुरूप हमारे प्रत्याक्रमण का स्वरूप अद्यतन नहीं हो पाता और परिणाम स्वरूप प्रथम दृष्टया हमें हानि उठानी ही पड़ती है। वर्तमान में हमारे साथ ऐसा ही हो रहा है। अनेक प्रत्यक्ष और परोक्ष आक्रमण हमारे पर हो रहे हैं। हमारे अस्तित्व को कमजोर करने के लिए हमारे जीवनयापन के साधनों को छीन कर हमें आर्थिक रूप से पंगु बनाने के लिए आक्रमण किए गये। हमारे राजनीतिक अस्तित्व को सत्ता के सहारे समाप्त करने का प्रयास बदस्तूर जारी है। इन सब आक्रमणों से संघर्ष करने की प्रेरणा के अक्षय स्रोत हमारे इतिहास पर भिन्न भिन्न प्रकार से आक्रमण किए जा रहे हैं। हमारे आप्त पुरुषों की पहचान को विवादित बनाकर हमसे छीनने के लिए विभिन्न तरीकों से आक्रमण किए जा रहे हैं। हमारे संस्कारों और संस्कृति पर चोट की जा रही है, हमारी मान्यताओं को अवधिपार सिद्ध करने के लिए अभियान चलाये जा रहे हैं, हमारे आदर्शों को हमारी ही नजर में गिराये जाने का वातावरण बनाकर हमें उसके जाल में फंसाया जा रहा है। कुल मिलाकर वर्तमान में हो रहे आक्रमण भिन्न भिन्न प्रकृति के हैं और आक्रमणकारी भी प्रकट न होकर अप्रकट रहते हुए परोक्ष रूप से वार किए जा रहा है। हमें ऐसे जाल में फंसाया जा रहा है कि जब हम एक आक्रमण का सामना करते हैं तो दूसरी तरफ हमारा वह प्रत्याक्रमण हमारे शत्रु की अपेक्षा हमें ही किसी न किसी रूप में हानि पहुंचा देता है और हम असावधानीवश स्वयं ही स्वयं पर आक्रमण कर बैठते हैं। उदाहरणार्थ वर्तमान में इतिहास पर एक नये प्रकार का आक्रमण किया जा रहा है। विभिन्न जाति समाजों के लोगों द्वारा हमारे इतिहास पुरुषों की पहचान पर प्रश्न उठाया जा रहा है। उन्हें अपनी जाति समाज का बताकर मिथ्या दावे किए जा रहे हैं और हमारे व उनके संबंध को नकारने के कुत्सित प्रयत्न किए जा रहे हैं। इसके पीछे एक सोची समझी रणनीति चल रही है। ऐसा करने वाले लोग जहाँ उन जाति समाजों को उन महापुरुषों से जोड़कर उनका मिथ्या स्वाभिमान जागृत करने के नाम पर उन्हें अपनी ओर लामबद्ध कर रहे हैं वहीं हमारे और उन जाति समाजों के बीच के संबंधों को क्षीण कर हमें राजनीतिक रूप से अलग थलग करने का षड़यंत्र कर रहे हैं। ऐसे में हम जब उन जाति समाजों का विरोध करें तो अलग थलग पड़ते हैं और न करें तो हमारे महान पूर्वजों की राजपूत के रूप में पहचान प्रभावित होती है। ऐसे में हमारा प्रत्याक्रमण हमें ही हानि पहुंचा देता है और इसीलिए यहां हमें बहुत सावधानी की जरूरत है लेकिन क्या हम ऐसी सावधानी रख पा रहे हैं? हम भी हमारे प्रतिक्रियावादी स्वभाव के कारण उस पूरे समाज या जाति के खिलाफ अपनी अपरिपक्व प्रतिक्रिया देते हैं और परिणामस्वरूप अपनी ही हानि कर बैठते हैं। यहाँ हमें यह समझने की आवश्यकता है कि उन जाति समाजों के कुछ शरारती लोग ऐसा कर रहे हैं और हमारा जबाब शालीन तरीके से उन्हीं लोगों को होना चाहिए तथा उसमें यह सावधानी रखी जानी चाहिए कि हमारी प्रतिक्रिया ऐसी न हो जो हमारे पीढियों के सामाजिक ताने बाने को आहत करने वाली बन जाए। लेकिन क्या हम ऐसा कर पाते हैं? सोशल मीडिया पर दिन प्रतिदिन आने वाली प्रतिक्रिया तो ऐसी नहीं होती और ऐसी नहीं होती इसीलिए हानि का मार्ग खोल देती है। हमें यहाँ यह समझना पड़ेगा कि उस जाति समाज का 5 प्रतिशत हिस्सा भी इन गतिविधियों में शामिल नहीं है। शेष 95% तो इन सब बातों से अप्रभावित है लेकिन जब हम किसी जाति या समाज का समग्र विरोध करते हैं तो उन 95% को भी हमारा विरोधी बनने का मार्ग प्रशस्त करते हैं और यही तो हमारे वे विरोधी चाहते हैं कि हमारे विरोधियों की संख्या बढ़ती रहे और हम अलग थलग पड़ते रहें। समग्र विरोध की बात करें तो हमारे सोशल मीडिया के वीर एवं तथाकथित सामाजिक यौद्धा प्रायः विभिन्न राजनीतिक दलों एवं संगठनों का समग्र विरोध करने का भी आह्वान करते रहते हैं। कभी वे भाजपा के विरोध की बात करते हैं तो कभी कांग्रेस की। कभी वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विरोध की बात करते हैं तो कभी बुद्धिवादी जाति समाजों की। यहां भी हमें यह समझना पड़ेगा कि क्या कोई भी समाज आज देश की मुख्यधारा के किसी राजनीतिक दल या संगठन का समाज रूप में विरोध कर अपने लोगों के हित साध सकता है? आजादी के तुरंत बाद हमने विशेष रूप से राजस्थान में कांग्रेस पार्टी का विरोध किया और परिणामस्वरूप लगभग तीन चार दशक तक सत्ता प्रतिष्ठानों में समुचित भागीदारी से वंचित रहे। उस विरोध को प्रभावी बनाने के लिए जिस तात्कालिक विपक्ष का झंडा उठाये हम घूमते रहे, उसे जमीनी स्तर पर जीवित ही नहीं रखा बल्कि मजबूत बनाया वही राजनीतिक दल जब आज सत्ता की चाबी अपने नियंत्रण में लेने में सफल हुआ तो अब हम उनका विरोध करने की बात करते हैं और हमारे दशकों के प्रयत्नों का लाभ लेने का जब अवसर आया तो हम सत्ता प्रतिष्ठानों में भागीदारी प्राप्त करने की रणनीति बनाने की अपेक्षा विरोधी की भूमिका भली प्रकार निभाने की बातें कर अपने आपको समझदार कहलाने का तमगा देने को आतुर हैं। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

खरी-खरी

यह कैसा जनकल्याण?

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 7 जून 2021 को राष्ट्र के नाम संबोधन के दौरान दी गयी जानकारी के अनुसार गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत 80 करोड़ लोगों को दीपावली यानी नवम्बर 2021 तक मुफ्त में अनाज दिया जाएगा। इससे पहले प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना 2.0 के तहत फ्री राशन योजना का ऐलान मई और जून 2021 तक के लिए ही किया गया था। लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 7 जून 2021 को राष्ट्र के नाम संबोधन के दौरान 80 करोड़ लोगों को अब दिवाली तक फ्री में राशन देने ऐलान किया है। समाचार माध्यम से छपी खबर के अनुसार देश में 80 करोड़ लोगों के नाम राशन कार्ड में दर्ज हैं और इस प्रकार हर राशन कार्ड धारक परिवार को प्रति सदस्य 5 किलो के हिसाब से गेंहूँ या चावल दिया जाएगा। यहाँ यह विचारणीय है कि योजना का नाम प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना है और उसके तहत देश की 60% से अधिक जनसंख्या को शामिल किया जा रहा है तो क्या सरकार ने मान लिया है कि देश की इतनी बड़ी जनसंख्या सरकारी परिभाषा के अनुसार गरीब है? पाठकों में से अधिकांश लोग राशन कार्ड धारक हैं, वे स्वयं की स्थिति पर विचार करें कि क्या वे इस महामारी के काल में इतने अक्षम हो गये हैं कि अपने परिवार के लिए अनाज भी नहीं खरीद पा रहे हैं? हो सकता है कि अनेक परिवारों की वास्तविक स्थिति ऐसी हो लेकिन क्या सभी परिवार ऐसे हैं? विगत दिनों एक चर्चा में सुनने को मिला कि एक अफसर किसी क्षेत्र में सरकार की जनकल्याण योजनाओं के प्रभारी थे। वे दशकों पहले उन योजनाओं के लाभार्थी ढूंढने के लिए किसी गांव में गये और लोगों से आग्रह किया लेकिन उनकी अपेक्षा के अनुरूप लाभार्थी नहीं जुट पाये। लोगों ने बिना मेहनत के कुछ भी लेने से मना कर दिया। कालांतर में कुछ वर्षों बाद वे अधिकारी पुनः उसी गांव में गये और उन्होंने देखा कि जिन लोगों ने उनको उस समय मना किया था वे आज उन सरकारी सुविधाओं को प्राप्त करने को उतावले हो रहे थे। उनको यह क्षरण देखकर आश्चर्य हुआ कि जो लोग कुछ वर्षों पहले तक बिना मेहनत के कुछ प्राप्त करने से नकार रहे थे वे आज मुफ्त की प्राप्ति के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। आखिर इस क्षरण का क्या कारण है? किसने जनता की मूल्यों के प्रति आस्था को इस स्तर तक कम कर दिया? वे कौनसे कारण रहे जिन्होंने जनता की कर्म के प्रति आस्था मिटा कर उन्हें अकर्मण्यता की ओर धकेल दिया? इन प्रश्नों के उत्तर ढूंढने जायेंगे हमें इस आलेख के प्रथम अवतरण को फिर से पढ़ना पड़ेगा। जहां सरकार देश की 60% जनता को बिना कुछ किए 5 किलो अनाज प्रतिमाह देने की घोषणा करेगी वह जनता शनैः शनैः अकर्मण्यता की ओर क्यों नहीं बढ़ेगी? आज हमारे देश में यही हो रहा है। यह आज ही नहीं हो रहा बल्कि विगत 70 वर्षों से हो रहा है। सरकारों द्वारा अपने आपको जनकल्याणकारी दिखाने के लिए यही सब किया जा रहा है। यहां जनकल्याणकारी होना महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि जनकल्याणकारी दिखना जरूरी है। एक संदेश देना जरूरी है कि हम जनकल्याणकारी हैं लेकिन वास्तव में जनकल्याण क्या है, इससे सरकारों को कोई मतलब नहीं है। जो शासक अपने नागरिकों को अकर्मण्य बनाता है वह जनकल्याणकारी कैसे कहा जा सकता है? लेकिन यह देश का दुर्भाग्य है कि सरकारों का जनकल्याण यहीं तक सीमित है। सरकार में आने वाले राजनेता अपने आपको राष्ट्र के ट्रस्टी नहीं मानते बल्कि मालिक मानते हैं और सत्ता में आते ही यह मानने लगते हैं कि राष्ट्र की संपत्ति केवल उनके हितों को संरक्षित करने के लिए है और इसके लिए वे इसे मुक्त हस्त से लुटाने के अधिकारी हो गये हैं। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

समन्वय का सुंदर उदाहरण 'राजपूत चिकित्सा सेवा' समूह

आपदायें हमें अनेक दंश देती हैं तो अनेक प्रेरणाएं भी दे जाती हैं। आपदा का समय हमें हमारी क्षमताओं को समझने, उनको संयोजित कर उनका श्रेष्ठतम उपयोग करने को प्रेरित करता है। ऐसी ही एक प्रेरणा निकली कोरोना महामारी की दूसरी लहर के समय जोधपुर से। जोधपुर में जन संपर्क विभाग में कार्यरत राजेंद्र सिंह लीलिया ने इस महामारी के दौरान 4 मई को समाज के लोगों की चिकित्सकीय सहायतार्थ एक वाट्सएप समूह 'राजपूत चिकित्सा सेवा' के नाम से गठित किया। उसमें जोधपुर के विभिन्न अस्पतालों में सेवा दे रहे राजपूत चिकित्सकों, पैरा मेडिकल स्टाफ, समाज के अधिकारियों, समाज में विभिन्न सामाजिक संगठनों में काम कर रहे लोगों, पत्रकारों आदि को शामिल किया और आपसी समन्वय से समाज के लोगों को चिकित्सकीय सहायता उपलब्ध करवाने का कार्य प्रारंभ किया। बीमार व्यक्ति की प्रथम और सर्वाधिक महत्वपूर्ण सहायता उसे यह बता देना होता है कि उसे किस अस्पताल में किस चिकित्सक से मिलना है। दूसरी महत्वपूर्ण सहायता यह है कि जहां वह जाये उसे वहां पर समुचित जबाब मिल जाये और समय पर उसका ईलाज प्रारंभ हो जाये। इन दोनों ही प्रकार के कामों में इस समूह ने उल्लेखनीय कार्य किया। महामारी के दौरान इस बार सर्वाधिक बड़ा संकट अस्पतालों में बैड की उपलब्धता थी और इस समूह के माध्यम से इस काम में बहुत सहायता मिली। एक समूह की सदस्य संख्या पूर्ण होने पर दूसरा समूह बनाया गया और उसमें गांव स्तर तक के लोगों को जोड़ा गया। ज्यों ही किसी मरीज को संभाग में किसी भी जगह से जोधपुर के लिए रैफर किया जाता उसकी सूचना समूह में मरीज के सहयोगी के मोबाइल नंबर के साथ शेयर कर दी जाती। समूह में मौजूद चिकित्सक, पैरा मेडिकल स्टाफ या प्रभारी प्रशासनिक अधिकारी अपने यहाँ उपलब्ध बैड की सूचना शेयर कर देते और मरीज के सहयोगी से संपर्क भी कर लेते जिससे मरीज जोधपुर पहुंचता तब तक सभी पूर्व तैयारियां हो जाती और आते ही ईलाज प्रारंभ हो जाता। समूह में समाज के ब्लड बैंक संचालक भी जुड़े थे इसलिए रक्त व प्लाज्मा की उपलब्धता का भी संकट नहीं आया और जब आवश्यकता पड़ी, उपलब्ध करवा दिया गया। समूह में कुछ मरीजों के जांच आदि में आ रही आर्थिक कठिनाई को लेकर चर्चा हुई और स्वतः स्फूर्त सहयोग मिलना प्रारंभ हुआ। छोटे छोटे सहयोग से लगभग 4 लाख रुपये एकत्र हो गये। अनेक मरीजों के लिए दवाई, जांच, एंबुलेंस आदि के लिए इस राशि में से मदद की गई। संबंधित मरीज का नाम समूह में सार्वजनिक नहीं किया गया परंतु उसका लेखा जोखा पूरा रखा गया। कालांतर में इस राशि के समुचित उपयोग एवं भविष्य में इसकी निरंतरता बनाये रखने के लिए सहकारिता विभाग में प्रबंध निदेशक पद से सेवानिवृत्त रामचंद्रसिंह जोधा के निर्देशन में 'वीर दुगार्दास राठौड़ चिकित्सा सेवा समिति' के नाम से रजिस्ट्रेशन करवा लिया गया एवं बैंक में खाता खुलवा कर व्यवस्थित काम किया जा रहा है। एक परिवार जिसमें कमाने वाले सदस्य कोरोना की भेंट चढ गये एवं पीछे विधवा महिला व छोटे बच्चे ही बचे, उनकी सहायता भी इस समूह के माध्यम से की गई और सभी के थोड़े थोड़े सहयोग से एक लाख रुपये एकत्र हुए। इस संपूर्ण संयोजन में महिला व बाल विकास विभाग के उपनिदेशक श्रवणसिंह राजावत, आर पी एस चैनसिंह महेचा, आर पी एस राजवीर सिंह चांपावत, चिकित्सा विभाग के डिप्टी डायरेक्टर डॉ. सुनील कुमार सिंह बिष्ट, डिप्टी सीएमएचओ डॉ प्रताप सिंह राठौड़, डॉ. राजेंद्र सिंह जोधा, डॉ. गिरधर सिंह भाटी, डॉ. सुरेंद्र सिंह भाटी, डॉ. सुरेंद्र सिंह राठौड़, डॉ. फतेह सिंह भाटी, डॉ. इन्द्रजीत सिंह देवड़ा, डॉ. इन्द्र सिंह राठौड़, डॉ. भंवरसिंह जोधा, डॉ. एस पी सिंह, डॉ. बख्तावर सिंह सोढा, डॉ. वीर सिंह राठौड़, डा. हरि सिंह भाटी, डॉ. हिम्मत सिंह शेखावत, एमजीएच ब्लड बैंक के प्रभारी नारायण सिंह इंदा, सुपरवाइजर विक्रम सिंह, फार्मासिस्ट प्रताप सिंह, गाइड सिंह, सोहन सिंह, मोहन सिंह लीलिया, महिपाल सिंह राठोड़, भंवरसिंह राठोड़, जब्बर सिंह, जब्बर भाटी प्रभारी MRI केन्द्र MDM, दीपेन्द्र सिंह, देवेंद्र सिंह नाडसर, गंगासिंह, अजयपाल सिंह, केशरसिंह गादेरी आदि पैरा मेडिकल स्टाफ के अलावा एम्स में सिक्युरिटी इंचार्ज डिप्टी कमांडेंट जब्बर सिंह भाटी, ब्लड बैंक संचालक रणजीत सिंह ज्याणी, वीरेंद्र सिंह चिंडालिया, जेठु सिंह भाटी, निवर्तमान छात्र संघ अध्यक्ष रविन्द्र सिंह भाटी, राजबहादुर सिंह सिलारी, शेरसिंह अरटिया आदि का पूरा सहयोग रहा। केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री गजेन्द्रसिंह के स्थानीय कार्यालय के साथ सामाजिक संगठनों के पदाधिकारियों का भी उल्लेखनीय सहयोग रहा। कोरोना की दूसरी लहर बीत जाने के बाद भी यह समूह सक्रिय है और समाज के जोधपुर रैफर होने वाले मरीजों की सहायता कर रहा है। प्रायः समाज के अभावों का रोना रोकर निराशा की बात करने वाले लोगों के लिए यह समूह एक उदाहरण है कि किसी भी क्षेत्र में हमारे समाज के लोगों का अभाव नहीं है बल्कि उनसे संपर्क कर, उनका समुचित संयोजन कर समाज के लिए समुचित उपयोग करने की पहल का अभाव है। जब भी ऐसी पहल होती है सब तरफ से आशातीत सहयोग भी मिलता है।

विस्तार कार्यक्रम के तहत बसियां क्षेत्र की बैठक

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के कार्य विस्तार कार्यक्रम के तहत जैसलमेर के बसियां क्षेत्र की एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन जोगीदास का गांव में किया गया। पूज्य श्री तन सिंह जी के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। फाउंडेशन की केंद्रीय समिति के सदस्य महेंद्र सिंह तारातरा ने श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के उद्देश्य के बारे में बताते हुए कहा कि आज समाज में युवाओं के दिल में व्यवस्था के प्रति जो नकारात्मक भाव है उसे दूर कर समाज में सकारात्मक क्रियाशीलता को बढ़ावा देना ही फाउंडेशन का मुख्य उद्देश्य है। संविधान में जो बातें लिखी गयी हैं वे हमारे पूर्वजों के हमेशा से आदर्श वाक्य रहे हैं। सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न राज्य के लिए हम सदियो से लड़ते आये हैं, इतिहास में हमने कभी संप्रदाय, जाति के आधार पर भेदभाव नहीं किया, हर जाति वर्ग को समान भाव से देखा। इसी प्रकार संविधान के जो मूल तत्व हैं वो हमारे इतिहास व वर्तमान के अनुकूल हैं इसलिये संविधान के प्रति हमारे मन में आदर भाव होना चाहिए। हमें आज के युग के संवैधानिक साधनों का उपयोग करना है। अन्याय के खिलाफ प्रतिकार करने के हमारे नैसर्गिक गुण को हमें जीवित रखते हुए युगानुकूल साधनों का उपयोग करना सीखना होगा। हम अपने गांव या शहर को अपना मानें, ये हमारे ही पूर्वजो द्वारा बसाये गये हैं, यहां की तकलीफों व कमियों से हमें पूरा सरोकार रखना चाहिए। विभिन्न सरकारी योजनाओं जैसे विधवा पेंशन योजना, पालनहार योजना, श्रमिक कार्ड आदि को लेकर अपने अपने क्षेत्र में अधिकतम सहयोग किया जाना चाहिए। राजनीतिक, प्रशासनिक, व्यावसायिक क्षेत्र में कार्यरत लोगों के बीच समन्वय हो ताकि एक दूसरे के सहयोगी सिद्ध हो सकें। आर्थिक रूप से पिछड़ों को दिए गए आरक्षण में आयु सीमा में छूट देने के लिए मुख्यमंत्री जी का आभार व्यक्त किया गया व फाउंडेशन व अन्य सभी संगठनों ने इसके लिए जो प्रयास किये उन्हें सराहा गया। अभी केंद्र में आर्थिक आधार पर दिए गए आरक्षण में कई विसंगतिया विद्यमान हैं जिन्हें दूर करवाने के लिए फाउंडेशन द्वारा अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत पंचायती राज व नगर निकाय के जनप्रतिनिधियों से पत्र लिखवा कर प्रधानमंत्री को मेल करवाये जा रहे हैं। अपनी स्थापना के 75वें वर्ष को श्री क्षत्रिय युवक संघ हीरक जयंती वर्ष के रूप में मना रहा है और इस उपलक्ष्य में वर्ष भर विभिन्न कार्यक्रम होंगे जिसमे सभी को अधिकतम भागीदारी निभाने का अनुरोध किया व 22 दिसम्बर 2021 को जयपुर में विशाल कार्यक्रम के रूप में स्थापना दिवस मनाया जाएगा, इसमें भी अधिकतम सहयोग की अपील की गयी। ये विस्तार कार्यक्रम अगले दो माह तक चलेगा जिसके तहत तहसील स्तर तक SKPF पहुंचने का प्रयास करेगा। स्थानीय सहयोगी नरेशपालसिंह तेजमालता ने द्विवार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन तारेंद्र सिंह झिंझनियाली ने किया। कार्यक्रम में हीरेन्द्र सिंह दुधवा, रणवीर सिंह खुहड़ी, स्वरूप सिंह कुंडा, दातार सिंह देवड़ा, जवान सिंह मोढ़ा, गंभीर सिंह मोढ़ा, गणेश्वर सिंह तेजमालता, मनोहर सिंह झिंझनयाली आदि समाजबंधुओं ने अनौपचारिक चर्चा में अपने विचार प्रस्तुत किए।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

केन्द्रीय वर्चुअल शाखा में समझा संघ साहित्य का मर्म

13 जून को संघशक्ति की रविवारीय शाखा माननीय संघ प्रमुख श्री के सान्निध्य में संपन्न हुई। शाखा के दौरान डायरी के अवतरण संख्या 213 पर चर्चा करते हुए माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने बताया कि विकार सभी में पैदा होते हैं, किसी में छोटा और किसी में बड़ा। संघ के किसी स्वयंसेवक में कोई विकार पैदा होने पर पूज्य श्री तनसिंह जी के अंतर के में यही भाव उठता था कि जीवन बहुत थोड़ा और कार्य बहुत अधिक है। सांघिक साधना में हमारे साथ रहने वाले ऐसे भी व्यक्ति होते हैं जो जीवन भर शिकायत करते रहते हैं, आलोचनाएं करते रहते हैं तो ऐसे भी साथी होते हैं जो बिना किसी शिकायत के बड़े से बड़ा त्याग करते हुए हमारे साथ बने रहते हैं। प्रथम कोटि के साधकों के लिए ही पूज्य श्री ने कहा है कि उन्हें साथ रहकर जीना सीखना आवश्यक है। हमें भी यह विचार करना है, आत्मावलोकन करना है कि क्या हमने साथ रहकर जीना सीख लिया है? क्या हमारे मन में विरोधी विचार पैदा नहीं होते? संघ के निर्णय को मानने में क्या हमारे भीतर कोई शंकायें पैदा होती हैं? यदि ऐसा विरोध अथवा शंका हमारे भीतर पैदा होती है तो इसके केवल दो ही कारण हो सकते हैं। पहला कि हम ने अपने आप को संघ से बड़ा मान लिया है, तभी हम संघ की अथवा अपने अग्रगामी की समीक्षा करने लगते हैं। समीक्षा वही करता है जो बड़ा होता है और यदि हम संघ से बड़ा अपने आप को मानने लग गए हैं तो हम संघ में रह नहीं सकेंगे। दूसरा कारण यह हो सकता है कि हमारे भीतर कोई ऐसा कीड़ा कुलबुला रहा है जो हमारी संचित साधना को तो समाप्त करेगा ही साथ ही दूसरे साधकों में भी विकार पैदा करेगा। इसलिए अपने आप का आत्मावलोकन हम निरंतर करते रहें और ऐसा कोई भी विकार यदि हमारे भीतर पैदा हो गया है तो जागृत होकर उसे दूर करें और इसके लिए अपने वरिष्ठ स्वयंसेवकों का मार्गदर्शन लेते रहें। स्वयंसेवकों के प्रश्नों व जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए उन्होंने आगे कहा कि संघ का जो विस्तार हुआ है वह ऐसे ही लोगों के कारण हुआ हैं जिन्होंने साथ रहकर जीना सीखा और प्रत्येक परिस्थिति में कदम से कदम मिलाकर चलते रहे हैं। किंतु जैसे ही हमारी कोई महत्वाकांक्षा अथवा स्वार्थ जागता है तो वह हमारी विचारधारा में संकरता पैदा करने का कार्य करता है और हम संघ की विचारधारा को पूर्णतया आत्मसात नहीं कर पाते

हैं। अपने आपको देखने, अपनी गलतियों को पहचानने और बार-बार उनको रोकने का अभ्यास करने से ही यह विकार स्थाई रूप से दूर होते हैं। इसीलिए हमें बार-बार डायरी लिखने को कहा जाता है ताकि हम निरंतर अपने आप को तोल सकें कि हम कहां पर चूक कर रहे हैं। आत्मावलोकन ही संघ के मर्म को समझने की विधि है। इसी प्रकार 20 जून की रविवारीय शाखा में डायरी के अवतरण संख्या 63 पर चर्चा करते हुए माननीय महावीर सिंह जी ने कहा कि खिलौने बनाने के लिए चिकनी मिट्टी की आवश्यकता होती हैं, बालू रेत से केवल अस्थाई घरौंदे ही बनाए जा सकते हैं जो नमी के समाप्त होते ही ढह पड़ते हैं। इसी प्रकार सीमेंट के कण भी जल के माध्यम से आपस में जुड़कर ठोस आकृति धारण कर लेते हैं, उसके पश्चात भले ही वह जल उड़ जाए लेकिन वह आकृति बिखरती नहीं है। इस दृष्टिकोण से श्री क्षत्रिय युवक संघ की साधना में बुद्धि जल का कार्य करती हैं और भावना सीमेंट की तरह कार्य करती है। प्रारंभ में हम सभी बुद्धि से ही प्रेरित होकर संघ से जुड़ते हैं किंतु आगे चलकर यदि हमारा भाव प्रगाढ़ नहीं होता है तो हम अंत तक साधना में प्रवृत्त नहीं रह सकेंगे। यह भी सत्य है कि अकेली भावना बिना बुद्धि के समर्थन के प्रगाढ़ नहीं बन सकती। जिस प्रकार सीमेंट के कणों को आपस में जुड़ने के लिए जल की आवश्यकता पड़ती हैं उसी प्रकार भाव के जागरण के लिए भी प्रारम्भ में बुद्धि की जरूरत होती है। इसलिए हमें ना तो बुद्धि की उपेक्षा करनी है ना भाव धारा को सूखने देना है। किंतु हमें यह भी सावधानी रखनी होगी कि बुद्धि हमारी स्वामिनी ना बन जाए बल्कि हमारी साधन बन कर कार्य करे। यदि बुद्धि की प्रखरता और भावना की तरलता के बिना हम समाज का कार्य करने चलेंगे तो वह बालू रेत के घरौंदे जैसा ही होगा जिसे बिखेरने के लिए किसी बाह्य शक्ति की आवश्यकता नही होती, बल्कि जलवायु के प्रभाव से ही वह बिखर जाते हैं। आगे स्वयंसेवकों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि संघ में जब हम कार्य करते हैं तो अनेक बार ऐसे अवसर आते हैं जब हमारी बुद्धि ही हमें भटकाने का कारण बन जाती है। उस समय यदि हमारा भाव संघ के प्रति दृढ़ नहीं होगा तो हम कुतर्की, निष्क्रिय अथवा विरोधी भी बन सकते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि हम संघ के निरंतर संपर्क में रहें, अपने शिक्षक से निरंतर मार्गदर्शन प्राप्त करते रहें और आत्म चिंतन द्वारा अपने अंदर आने वाली विकृतियों को दूर करने के लिए सदैव प्रयत्नरत रहें। सहगायनों के अर्थबोध के साप्ताहिक वर्चुअल उद्बोधन की श्रृंखला में 17 जून को पूज्य तन सिंह जी रचित सहगीत 'ये नैया बड़ी पुरानी' पर चर्चा करते हुए माननीय अजीत सिंह जी ने बताया कि इस गीत में हमारे समाज को तन सिंह जी ने नैया की संज्ञा दी है। यह समाज बहुत पुराना है। जितनी पुरानी यह सृष्टि है उतना ही पुराना हमारा समाज है। किंतु आज हमारा यह महान समाज समुद्र की लहरों में डगमगाती हुई कमजोर नैया की भांति लड़खड़ा रहा है। समाज को लड़खड़ाने वाली ये लहरें हमारी ही गलतियों का स्वरूप है। हमारी गलतियों, अक्षमताओं और कमजोरियों के कारण ही हमारा समाज पतन की ओर जा रहा है। इस पतन को रोकने के लिए आज हमें साहस के साथ साथ उचित मार्गदर्शन की भी आवश्यकता है। वह मार्गदर्शन देने का कार्य श्री क्षत्रिय युवक संघ कर रहा है। आवश्यकता केवल इतनी है कि हम साहस पूर्वक संघ के कार्य में जुट जाएं। हमारे समाज को कोई बाह्य शत्रु या परिस्थिति नष्ट नहीं कर सकती। केवल हम स्वयं ही अपने समाज को नष्ट कर सकते हैं और आज अपने धर्म, परंपराओं, मान्यताओं और संस्कृति को छोड़कर हम उसी मार्ग पर बढ़ रहे हैं। इसे रोकने के लिए आवश्यक है कि हम अपनी शक्ति को पहचानें और असमंजस को छोड़कर निश्चय पूर्वक कर्तव्य पालन करने में लग जाएं। परिस्थितियों का सही आकलन करके, उनके अनुसार उचित साधनों का प्रयोग करके, संकल्प पूर्वक कर्मरत होने पर ही हम लक्ष्य सिद्धि कर सकते हैं। दीर्घकालीन साधना और आत्मज्ञान की शक्ति ही समाज को सही राह पर ला सकती है। समाज में सदियों से व्याप्त अंधकार को दूर करने के लिए जुगनू की चमक पर्याप्त नहीं है, अपितु उसके लिए हमारा संपूर्ण जीवन ज्योतिर्मय होकर जल उठे तभी यह अंधकार दूर होगा। संघ यही कार्य कर रहा है और जो भी इस मार्ग पर चलना चाहता है उसके स्वागत के लिए सदैव तत्पर है। हमारी एकता से ही समाज के यह दुर्दिन समाप्त हो सकते हैं इसीलिए संघ हमें एकता के सूत्र में बांधने का कार्य कर रहा है। 24 जून के उद्बोधन में 'भुलाए ना भूले' सहगीत का अर्थबोध करते हुए माननीय अजीत सिंह जी ने कहा कि इस सहगीत में हमारे गौरवशाली इतिहास पर चर्चा की गई है। हमारी जाति ने जो पराक्रम किए हैं उनकी यशोगाथा इस गीत में वर्णित है। इतिहास समाज का आधार भी होता है और वर्तमान का प्रेरक भी होता है। हमारा इतिहास इतना महान और भव्य है कि उसे भुलाना चाहें तो भी भुलाया नहीं जा सकता। हमारे पूर्वजों ने प्रत्येक क्षेत्र में ऐसे आदर्श स्थापित किए जिन्हें आज तक भी अन्य कोई पार नहीं कर सका है। चाहे ज्ञान का क्षेत्र हो अथवा भक्ति का, वीरता का क्षेत्र हो अथवा सुशासन का, त्याग का क्षेत्र हो अथवा तपस्या का - सभी में हमारे पूर्वजों ने सीमाएं बांधी हैं। असंभव दिखने वाले कार्य भी हमारी कौम ने संभव कर दिखाए हैं। आर्त की रक्षा के लिए हमने तलवार भी उठाई तो साथ ही भटकते हुए संसार को सही मार्ग भी अपने आचरण द्वारा बताया। संपूर्ण विश्व पर हमारी विजय के चिह्न अंकित है। किंतु ऐसा गौरवशाली अतीत होते हुए भी आज हमारी स्थिति ऐसी दयनीय कैसे हो गई? इस पर विचार करना अत्यावश्यक है। आज संसार को मार्ग दिखाने की बात तो दूर रही हमारा समाज स्वयं ही सही मार्ग पर नहीं चल पा रहा है। अपने स्वधर्म को खोकर हमारा समाज किंकर्तव्यविमूढ़ अवस्था में खड़ा है। ऐसी स्थिति में श्री क्षत्रिय युवक संघ उसी गौरव के पुनर्निर्माण का कार्य कर रहा है। स्वधर्म रूपी संजीवनी को समाज की धमनियों में प्रवाहित करने के लिए संघ गांव-गांव, नगर-नगर जाकर समाज के युवाओं को जागृत कर रहा है। जो केसरिया ध्वज अतीत में हमारे पूर्वजों के त्याग, बलिदान और शौर्य का साक्षी रहा है उसी परम पूज्य केसरिया ध्वज की साक्षी में श्री क्षत्रिय युवक संघ हमारे उज्ज्वल भविष्य के निर्माण की साधना कर रहा है। नए सिरे से समाज भवन का निर्माण करने के लिए जो नींव के पत्थर बन सकें, ऐसे स्वयंसेवकों को तैयार करने के लिए संघ कार्य कर रहा है।

- अभयसिंह रोडला

(पेज एक से लगातार) **रामसिंह...**

उन्होंने कई उल्लेखनीय कार्य किए लेकिन दुर्भाग्य से उनके जीवन के बारे में लिखित जानकारी बहुत कम मिलती है। हमारे साथ यह समस्या है कि हमारे पूर्वजों ने इतिहास बनाने में रुचि रखी पर इतिहास लिखने व उन तथ्यों को संजो कर रखने में नहीं रखी और कालांतर में जनश्रुतियों पर आधारित इतिहास धीरे-धीरे लोप होता गया। हमारी इस कमजोरी का बदनीयत लोगों ने लाभ उठाया और इतिहास को गलत ढंग से लिखा। उन्होंने रामसिंह जी के जीवन की घटनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ का यही मापदंड है कि जिसका जीवन प्रेरणादायी हो उसको याद करना चाहिए। आज राम सिंह जी के वंशजों के परिवार का विस्तार उनके त्याग और न्याय प्रिय होने का ही पुण्य प्रताप है। हम उन्हें हम याद करें, उनके चरित्र का अनुकरण करें। सत्य की राह पर चलने पर प्रत्यक्ष में हमें हानि दिखाई दे भले पर हजार हाथ वाला कहीं से भी पूर्ति कर देता है। राम सिंह जी के परिवार को भी राज्य से कुछ नहीं मिला, वह दिखने में भले ही हानि लगे पर आज उनके वंशजों का जो परिवार फला फूला है, यह निश्चित रूप से उनके पुण्य का फल है। संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक बाबू सिंह बेरसियाला ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बताया की राम सिंह जी के परिवार में कई वीर पुरुष, तपस्वी और सन्यासी हुए उनमें उदय सिंह जी, तेजमल जी, अखेराज जी, मूलचंद जी, सरदार सिंह जी, जय सिंह जी, स्वरूप सिंह जी, चतर सिंह जी आदि का जीवन हमारे लिए अनुकरणीय है। जैसलमेर में श्री क्षत्रिय युवक संघ के कार्य विस्तार में भी रामसिंह जी के वंशजों का उल्लेखनीय योगदान रहा है। 1959 में जैसलमेर में संघ का पहला शिविर लगा उसमें रेमत सिंह झिनझिनयाली थे। उसके बाद गोपाल सिंह ने रणधा गांव में शिविर लगवाया। मूल सिंह झिनझिनयाली, गंगा सिंह, पूर सिंह तेजमालता जुड़े और आज सैकड़ों स्वयंसेवक इस परिवार से हैं। दीप सिंह रणधा ने रिडमल सिंह भाटी झिनझिनयाली द्वारा लिखित छंद व गीत ओजस्वी वाणी में प्रस्तुत किए। मेगूदान जी झिणकली ने भाटियों के विरुद बखान किए। राम सिंह स्मृति संस्थान के अध्यक्ष गिरधर सिंह जोगीदासकागांव ने राम सिंह जी के परिवार का परिचय व छतरी के पुनर्निर्माण कार्यक्रमों आदि के बारे में बताया। कार्यक्रम का संचालन तारेन्द्र सिंह झिनझिनयाली ने किया।

(पृष्ठ एक का शेष)

चुरू शहर...

कालांतर में स्थानीय राजपूत शासकों के संरक्षण में यह शहर एक व्यापारिक केन्द्र के रूप में स्थापित हुआ। इस प्रकार ठाकुर कुशालसिंह राठौड़ ही चुरू के नगर के वास्तविक संस्थापक थे। इन्हीं ठाकुर कुशाल सिंह जी की स्मृति को संजाये रखने एवं नयी पीढी को वास्तविक इतिहास से रूबरू होने की प्रेरणा देने के लिए श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन ने राज्य सरकार से मांग की है कि चुरू जिला मुख्यालय स्थित कलेक्टर कार्यालय में ठाकुर कुशाल सिंह कांधलोत की मूर्ति स्थापित की जाये एवं शहर में उपयुक्त स्थान पर उनकी स्मृति में एक पैनोरमा का निर्माण करवाया जाये। उल्लेखनीय है कि एक जाति विशेष के लोग बिना किसी प्राथमिक ऐतिहासिक स्रोत के ही प्रचार तंत्र के सहारे सत्ता में अपनी उपस्थिति के बलबूते अपनी जाति के किसी व्यक्ति को चुरू का संस्थापक घोषित कर चुके हैं। विभिन्न सरकारी दस्तावेजों में भी वे इसे मान्यता प्रदान कर चुके हैं। अभी हाल ही में एक विधायक ने उन व्यक्ति की मूर्ति लगाने की भी राज्य सरकार से मांग की है। ऐसे में हमारे लिए आवश्यक है कि हम हमारे वास्तविक इतिहास को उद्घाटित करें और उसकी स्मृति को स्थायी बनायें। इसी दृष्टिकोण से राज्य सरकार को यह पत्र लिखा गया है।

राम के गुणगान...

माननीय संघप्रमुख श्री ने कहा कि परिस्थितियों का रोना नहीं रोयें, ये रोना रोने से मिटनी नहीं हैं बल्कि मुकाबला करने से इनसे पार पाया जा सकता है और इनसे पार पाने का मार्ग यही है कि हम हर परिस्थिति में क्रियाशील बने रहें। ऐसा करने पर उनका प्रभाव निःशेष हो जाएगा और हम उनसे पार पा सकेंगे। हम अपने परिवार का घेरा बड़ा करें क्योंकि शास्त्रों में कहा गया है कि जिनका जीवन केवल अपने लिए होता है वह पशु समान है। हर व्यक्ति अपना अपना विचार करे कि कहीं मैं पशु तो नहीं हूं। संघ हमें इसका अहसास करवाता है और हमारे परिवार के घेरे को बड़ा कर पशुता से मुक्ति के मार्ग पर अग्रसर करता है। उन्होंने कहा कि संघ कभी यह नहीं कहता कि यही एक मात्र मार्ग है। जिनको चेले मूंडने होते हैं वे लोग ऐसा कहते हैं कि उनके अलावा संसार में कोई मार्ग नहीं है लेकिन संघ स्पष्ट कहता है कि इस संसार में श्रेष्ठता की ओर बढ़ने के अनेक मार्ग हैं और संघ भी उनमें से एक मार्ग है। जो भी इस मार्ग से श्रेष्ठता की ओर अग्रसर होकर राम बनने को प्रस्तुत होता है, संघ सदैव उसका स्वागत करने को तत्पर रहता है। इसके लिए समाज चरित्र का शिक्षण देकर हमारे घेरों को विस्तार देता है। केवल अपना हित सोचना समाज चरित्र नहीं है बल्कि अपने साथ चलने वाले, साथ रहने वाले संसार के अन्य लोगों की सुविधा असुविधा के बारे में सोचना ही समाज चरित्र है। पूज्य तनसिंह जी ने तो अपनी 'समाज चरित्र' पुस्तक में तो इतनी सावधानी की अपेक्षा की है कि हमारी प्रसन्नता का प्रकटीकरण भी किसी के दुःख का कारण न बन जाये। हम हंसते समय भी सावधान रहें कि इससे किसी को असुविधा तो नहीं हो रही है। इसी सावधानी की साधना है संघ। पूज्य तनसिंह जी की पुस्तक 'साधना पथ' में इस साधना की परिपक्वता का सोपान दर सोपान चित्रण है। श्रद्धेय आयुवान सिंह जी की 'मेरी साधना' इसी साधना की क्रमानुसार यात्रा का वर्णन व मार्गदर्शन है। 'समाज चरित्र' पुस्तक सरल और सीधी भाषा में इसी का वर्णन है। पूरे संघ साहित्य में इस यात्रा का संपूर्ण मार्गदर्शन समाया हुआ है। हम इस मार्ग पर प्रसन्नता पूर्वक अग्रसर होवें। दुःखी होकर काम नहीं करें, रोते रोते काम नहीं करना है अन्यथा यह हमारे लिए यह काम उपासना न होकर भार बन जाएगा। जीवन में जो भी आ रहा है उसको परमेश्वर का प्रसाद मानकर स्वीकार करें। बारिश आती है तब फसलें भी लहलहाती है तो बांध भी टूटते हैं। दोनों का अपना हेतु है, कुछ भी गलत नहीं है इसलिए मार्ग में आने वाले अनुभवों के हेतु को समझें, कुछ भी व्यर्थ नहीं है, परमेश्वर जो भी परिस्थिति भेज रहा है, उसका अपना हेतु है, निहेर्तुक कुछ भी नहीं है इसलिए हर परिस्थिति में गुण खोजने का अभ्यास करें, आलोचनाओं से बचें। अपने दो दिवसीय प्रवास के दौरान माननीय संघप्रमुख श्री ने सभी की कुशल क्षेम जानी एवं जैसलमेर में चलने वाले संघ कार्य से अवगत हुए। महामारी के कारण भौतिक कार्यक्रम नहीं हो पाने की बाध्यता के कारण संभाग में हो रहे वर्चुअल कार्यक्रमों की जानकारी ली। इस प्रवास के दौरान संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास भी साथ रहे। जैसलमेर जिले के सभी स्वयंसेवक इस दौरान संघप्रमुख श्री का सानिध्य लेने उपस्थित हुए।

भातृत्व प्रेम...

श्री क्षत्रिय युवक संघ के बालोतरा संभाग द्वारा संघ के हीरक जयंती वर्ष के कार्यक्रमों की श्रृंखला में 20 जून को सिवाना के शासक रहे राव जैतमाल की स्मृति में आयोजित वर्चुअल कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बाड़मेर संभाग के संभाग प्रमुख कृष्ण सिंह राणीगांव ने उपरोक्त बात कही। उन्होंने कहा कि राव जैतमाल जितने शूरवीर ही थे उतने ही आध्यात्मिक पुरुष थे। उनकी भक्ति और शक्ति के कारण लोग उन्हें दसवें शालिग्राम के नाम से भी जानते हैं। संघ परंपरा अनुसार प्रारंभ हुए कार्यक्रम को संबोधित करते हुए इतिहासकार राजेंद्र सिंह कविया ने बताया कि राव जैतमाल जी की भक्ति और शक्ति की अनेक घटनाएं जनमानस में प्रचलित है। उनके तपोमय जीवन के कारण पीठवा नामक चारण का कुष्ठ रोग दूर हो गया था। लोग बताते हैं कि जैतमाल जी ने उसे गले से लगाया और उसका कुष्ठ रोग ठीक हो गया। ऐसी ही अनेक चमत्कारिक घटनाओं की बातें जनमानस में प्रचलित हैं। इतिहासकार डा. नगेन्द्र सिंह भाटी ने बताया कि सिवाना के प्रथम राठौड़ शासक के रूप में उन्होंने एक श्रेष्ठ शासन व्यवस्था स्थापित की। उनकी दूरगामी समझ ने उनके वंशजों को श्रेष्ठता के मार्ग पर बढ़ाया। शिक्षाविद् फतेहसिंह पांयला कलां ने उनकी वंशपरंपरा की जानकारी देते हुए बताया कि राजस्थान में राठौड़ वंश के मूल पुरुष राव सीहा जी की आठवीं पीढी में राव सलखा जी हुए। सलखा जी के चार पुत्र रावल मल्लीनाथजी, राव जैतमाल जी, वीरमदेव जी व शोभत जी। पिता की जागीर में से राव जैतमाल जी को सिवाना का अधिकार मिला और वे सिवाना के पहले राठौड़ शासक हुए। उनकी संतानें जैतमालोत राठौड़ कही जाती हैं। कालांतर में उनकी संतानों में से कुछ का शासन धवा पर रहने के कारण इनकी एक शाखा धवेचा कहलाई जो आज सिवाना एवं जालोर के अनेक गांवों में निवासरत है। इसके अलावा भी गुड़ा आदि अनेक गांव जैतमालोत राठौडों की जागीर रहे हैं। उन्होंने बताया कि राव जैतमाल के बारह पुत्र व तीन पुत्रियाँ थी। साथ ही उन्होंने इनकी संतान के रिश्तों पर भी विस्तृत प्रकाश डाला। कार्यक्रम में बालोतरा संभाग के अतिरिक्त अन्य स्थानों के स्वयंसेवक व सहयोगी भी वर्चुअल रूप से उपस्थित रहे। इस प्रकार राव जैतमाल राठौड़ के जीवन दर्शन पर बालोतरा संभाग द्वारा आयोजित यह वर्चुअल कार्यक्रम संभाग प्रमुख मुलसिंह काठाड़ी के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

साक्षी भाटी राजस्थान में प्रथम रही

ताणुरावजी निवासी हठे सिंह भाटी की पुत्री साक्षी भाटी ने राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में 200 में से 197 अंक हासिल कर राजस्थान में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। हठे सिंह राज्य सेवा में अधिकारी हैं।

(पृष्ठ चार का शेष)

आखिर क्या...

हम प्रायः शिकायत करते हैं कि वे राजनीतिक दल हमारी अपेक्षा हमारे विरोधियों को नजदीक ला रहे हैं तो यहां हम इस व्यवहारिक पक्ष को भूल जाते हैं कि हर संगठन और राजनीतिक दल अपना समर्थक वर्ग बढाने को प्रयास करता है और जो उनके अनुकूल पड़ते हैं उनको निकट लाते हैं। हमारे विरोधी इस मानसिकता को समझते हैं और अपने आपको सत्ता प्रतिष्ठानों के अनुकूल बदल लेते हैं और हम ऐसा न कर केवल धौंस जमाकर विरोध जताते हैं। इस प्रक्रिया में हम यह भूल जाते हैं कि जो सत्ता में होते हैं वे धौंस सहन नहीं करते इसीलिए वे हमारे तमाम विरोधों को दरकिनार कर हमें अलग थलग कर देते हैं और हम वहीं खड़े रहते हैं जहां पूर्व में थे। ऐसे में हमें यह तय करना पड़ेगा कि हमारे प्रत्याक्रमणों की दिशा क्या हो, वे किनके प्रति प्रत्यक्ष हों और किनके प्रति परोक्ष हों? वे किसी दल, जाति, समाज या संगठन के खिलाफ हों या उनमें मौजूद हमारे विरोधियों के प्रति हों? हम केवल विरोधी ही बने रहें या कभी साथ रहकर समाज के समग्र हित भी साधें? ऐसे ही अनेक प्रश्न हैं जो हमारे प्रत्याक्रमणों की दिशा तय करते हैं। इनके समुचित उत्तर ढूंढे बिना हम धूल में लठ मारते रहेंगे और परिणाम वही ढाक के तीन पात ही रहेंगे। हालांकि देर सबेर हम सही दिशा भी पकड़ लेंगें लेकिन यह देर सबेर हमें जितनी हानि पहुंचा देगी उसकी भरपाई हमारे लिए सदा की तरह अतिरिक्त भार बनी रहेगी।

यह कैसा...

इसी मनोवृत्ति के कारण वे इस प्रकार की मुफ्त वाली योजनाएं लेकर आते हैं। कोई अनाज बांटता है तो कोई कपड़े बांटता है। कोई स्कूटी बांटता है तो कोई साईकिल बांटता है। कोई कर्जा माफ करता है तो कोई टेलिविजन बांटता है। उनका यह सब करने का उद्देश्य केवल जनता को राजी करना होता है। राष्ट्र की संपत्ति की लूट में भागीदार बनाना होता है और इस भागीदारी के द्वारा स्वयं लूटने का प्रमाण पत्र हासिल करना होता है। लेकिन इसका परिणाम अकर्मण्यता होता है, स्वाभिमान आदि उत्कृष्ट मानवीय मूल्यों का क्षरण होता है और यही परिणाम आगे जाकर राष्ट्रीय चरित्र का हनन करता है जो आज हमारे सामने है। हमें चारों ओर आज राष्ट्रीय चरित्र का अभाव नजर आता है। हर कोई इतना स्वकेन्द्रित होता जा रहा है कि निकटतम पारिवारिक संबंधों की भी आसानी से बलि चढ़ा देता है। ऐसे स्वकेन्द्रित लोग अपना शासक चुनते समय भी अपनी इसी प्रवृत्ति पर केन्द्रित रहते हैं और अपने जैसे ही लोग चुनते हैं। ऐसे चुने हुए लोग फिर वही प्रक्रिया दोहराते रहते हैं और राष्ट्र दुर्भाग्य के गर्त में गिरता रहता है। देश के इस दुर्भाग्य के अन्य भी कारण हो सकते हैं लेकिन यह कारण भी कम महत्वपूर्ण नहीं है लेकिन क्या हम इस कारण को समझ पा रहे हैं? जो समझ पा रहे हैं क्या वे इसका निवारण कर पा रहे हैं और जो निवारण कर रहे हैं क्या वे अन्यों को ऐसा करने को प्रेरित कर पा रहे हैं?

(पृष्ठ तीन का शेष)

वीर शिरोमणि...

हमारा अंततः लक्ष्य यह होना चाहिए कि हमें वापस उसी संस्कृति तक पहुंचना है। इतिहास से मिलने वाली प्रेरणा हमें उधर प्रवाहित करती है। श्री क्षत्रिय युवक संघ के संघ प्रमुख माननीय भगवान सिंह रोलसाबसर ने बताया कि परमात्मा ने हमें यह शरीर, इंद्रियां, मन, बुद्धि और अहंकार दिए हैं, इनका सदुपयोग ही हमें श्रेष्ठता की ओर ले जाता है। हमारे पूर्वजों ने इनके सदुपयोग का मार्ग प्रशस्त किया। स्वयं जीकर बताया। महाराणा प्रताप ने अपने सम्पूर्ण अस्तित्व का सदुपयोग मानवता के हित में किया इसीलिए आज वे हमारे आदर्श हैं और हम उनसे प्रेरणा लेने को प्रस्तुत हैं। अंत में कार्यक्रम संयोजक प्रेम सिंह बनवासा ने उपस्थित सभी अतिथियों का आभार ज्ञापित करते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

दीपसिंह सामी को पितृशोक

शेखावाटी क्षेत्र में संघ के स्वयंसेवक दीपसिंह सामी के पिता **जोरावरसिंह जी** का 7 जून को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की चिर शांति के लिए प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

जोरावरसिंह जी

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हमारे प्रिय साथी

वीरेन्द्रप्रताप सिंह निंबोकातालाब

के **भारतीय जनता युवा मोर्चा** के **जोधपुर जिला देहात (उत्तर)** के **जिलाध्यक्ष** बनने पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं तथा माननीय **गजेन्द्रसिंह शेखावत** केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री का आभार।

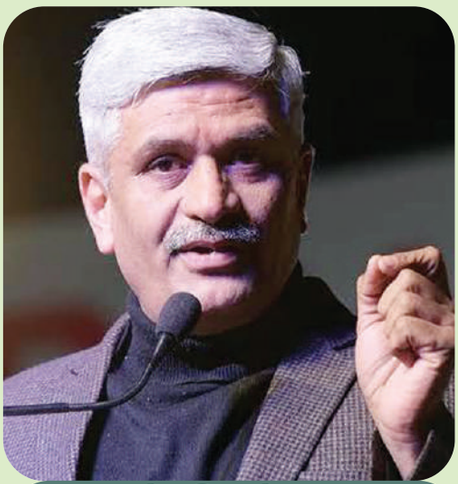

गजेन्द्रसिंह शेखावत
केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री

वीरेन्द्रप्रताप सिंह निंबोकातालाब

शुभेच्छु :

- ठाकुर श्री मनोहरसिंह बेदु
- श्री बाबूसिंह बापिणी
- श्री राजूसिंह बेदु
- श्री विजयसिंह बेदु
- श्री देवीसिंह खेतानी बापिणी खुर्द
- श्री कानसिंह निम्बोकातालाब (श्री मेहोजी साफा हाउस, ओसियां)
- श्री पेम्पसिंह बापिणी
- श्री राजूसिंह कड़वा
- श्री दुर्गासिंह मांगलिया खुशबू कैबल नेटवर्क, बीजीएस, जोधपुर
- श्री नखतसिंह कर्मावत, बापिणी
- श्री प्रेमसिंह सरपंच ईशरू
- श्री नारायणसिंह ईशरू (पूर्व फौजी)
- एडवोकेट दुर्गसिंह ईशरू
- श्री अभयसिंह पुत्र जोधसिंह ईशरू
- श्री भंवरसिंह मानणी ईशरू
- श्री समुन्द्रसिंह कड़वा
- श्री रामसिंह निम्बोकातालाब
- श्री मनोहर सिंह (बाण माता मोबाइल एंटरप्राइजेज) निम्बोकातालाब
- श्री गोरखसिंह बापिणी खुर्द
- श्री समुन्द्रसिंह खेतानी बापिणी खुर्द
- श्री भोमसिंह पुत्र श्री पुंजराजसिंह निम्बोकातालाब
- श्री भोमसिंह पुत्र श्री शिवसिंह जी निम्बोकातालाब

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org